

71

जुलाई-दिसम्बर, 2016

22

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

ISSN 0974-0066

(अंक-71, जुलाई-दिसम्बर, 2016)

संरक्षक

प्रो. राघवेन्द्र पी. तिवारी
कुलपति

प्रधान सम्पादक

प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा

सम्पादक

प्रो. निवेदिता मैत्रा

डॉ. पंकज चतुर्वेदी

डॉ. आशुतोष कुमार मिश्र

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. छबिल कुमार मेहेर



डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय

सागर (मध्यप्रदेश) - 470003

दूरभाष : (07582) 264455

ई-मेल : madhyabharti.2016@gmail.com

अनुक्रमणिका

नारी-विमर्श : पाश्चात्य ज्ञानोदय में स्त्री की वापसी विश्वनाथ मिश्र	5
निराला और उनकी शक्ति-पूजा उदित कुमार मेहर	33
कवि-कथाकार कुँवर नारायण की कहानियाँ मिथलेश शरण चौबे	49
आलोचना के स्वायत्त आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी आशुतोष	62
कृष्णा सोबती : 'समय सरगम' और वृद्धों की समस्याएँ विपिन शर्मा 'अनहद'	69
मोचीराम कविता का शैली वैज्ञानिक विश्लेषण अफरोज बेगम	81
कामता प्रसाद गुरु का व्युत्पत्ति-विचार : सामर्थ्य और सीमा रवीन्द्र कुमार पाठक	91
आल्हा-ऊदल एवं पृथ्वीराज चौहान माधवी श्रीवास्तव	106
आयुर्वेदिक चिकित्सा का वैदिक स्वरूप शशिकुमार सिंह	113
प्राचीन भारत में राज भगिनी ज्योति सराफ	120
भारतीय किसान आन्दोलन का समाजशास्त्रीय अनुशीलन नंदी पटोदिया	125
भारतीय अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्र की भूमिका सुनीता जैन	131
मृत्यु दर्शन सुरेन्द्रसिंह नेगी	139

भोधीराम कविता का शैली वैज्ञानिक विश्लेषण

अकलेश केसव

किसी भी कविता का अध्ययन उस कविता के विश्लेषण से सम्बद्ध है। कवि अपना भावबोध विश्लेष-पद्धति से प्रस्तुत करता है, पर श्रोता या पाठक उसका भक्ति विश्लेष-पद्धति से करता है। यह विश्लेषण जिससे ही सूक्ष्म होता है कविता के अर्थ-बोध की प्रभाविकता और विशेषता उसने ही महत्वपूर्ण ढंग से उजागर होगा, क्योंकि विश्लेषण ही कविता के उत्कर्ष का सही उद्घाटक है। इसी विश्लेषण से कवि का कौशल भी स्पष्ट होता है। इस सम्बन्ध में चान्देय शशिभूषण शीतांशु का मानना है कि कविता का शैतिकीय विश्लेषण एक ओर काव्यशास्त्र की भारतीय परम्परा में यदि भाष्य या टीका-पद्धति से विश्लेषण का यह दायित्व सम्पादित किया है तो दूसरी ओर पाश्चात्य परम्परा में 'प्रैक्टिकल क्रिटिसिज्म' की पद्धति ने भी बहुत दूर तक ऐसा विवेक-विश्लेषण प्रस्तुत किया है। वास्तव में शैतिकीय विश्लेषण इस विश्लेषण के सन्दर्भ में तीस्ता आगम है। यह पद्धति अन्य विश्लेषण पद्धतियों की अपेक्षा अधिक सूक्ष्म और वैज्ञानिक है। यह विश्लेषण कविता के भीतर से उसकी निर्धारित भाषा की आवश्यक संघटना पर भी ध्यान देती है। साथ ही यह हर कविता को अपने-आप में स्वायमान वस्तुनिष्ठ ढंग से उसका विश्लेषण करती है।

शैली के वैज्ञानिक विश्लेषण की प्रविधि को शैली विज्ञान कहते हैं। प्रायः यह कहा जाता है शैली विचारों और भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम होता है। शैली विचारों का वह परिधान है, जिसके माध्यम से हम अपनी बात को दूसरों के समक्ष रखते हैं। अतः भाषा और शैली में कोई खास अन्तर नहीं है। शैली के वैज्ञानिक विश्लेषण की कलौती पर भी कवियों की महत्वपूर्ण कविताओं पर बात की जानी चाहिए। प्रायः कविता के शैली-विश्लेषण पर बात या लेख बहुत कम देखने को मिलते हैं। भाषा विज्ञान में भाषा की पाँच इकाइयाँ मानी जाती हैं और ये इकाइयाँ हैं- ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य एवं अर्थ। इन्हीं पाँचों को आधार बनाकर शैली विज्ञान की भी पाँच भाषाएँ निम्नलिखित हैं- ध्वनि शैली विज्ञान, शब्द शैली विज्ञान, रूप शैली विज्ञान, वाक्य शैली विज्ञान तथा अर्थ शैली विज्ञान। इनके अतिरिक्त प्रोमित, अप्रस्तुत, लोछिन को भी शैली विज्ञान की भाषा के अन्तर्गत रखकर शैली वैज्ञानिक अध्ययन तथा विश्लेषण किया जा सकता है। यहाँ एक बात को जान लेना जरूरी है कि भाषा विज्ञान के अन्तर्गत भाषा का विवेचन तथा विश्लेषण किया जाता है, जबकि शैली विज्ञान भाषा विज्ञान के आगे और गहरे जाकर साहित्य के सार्विक कथ्य को प्रकाशित करता है। किसी कवि की काव्यभाषा क्या है? कविता में शैली के किन-किन उपादानों की सहायता से कवि अपनी बात को पाठकों के समक्ष रखता है। यह जानकारी हमें शैली-वैज्ञानिक-विश्लेषण से ही प्राप्त हो सकता है। शैली भाषागत अभिव्यक्ति की विशिष्ट एवं वैयक्तिक सार्वभौमिक पद्धति है। शैली का अस्तित्व यही होता है, जहाँ भाषा विशिष्ट